Dr. Priti Ranjan
Assistant Professor
H.D Jain College (Ara)

B.A Part-I
Paper-1

Topic - Rig vedic sabhyata =2
Part - II

अनार्य सरदार पुनः आर्य व्यवस्था में शामिल हो जाये - बेलबुध, तीरवहा इत्य

विनिमय प्रणाली

इस काल में वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी। गाय, घोड़े व निष्क का उपयोग होता था। निष्क संभवतः स्वर्ण आभूषण होता था। सिक्के प्रचलित नहीं हुए थे। ऋण देकर ब्याज लेने वाले को बेकनाट कहा जाता था।

समाज

प्रारंभ में आर्य एक ही वर्ण के थे और आर्यों का समूह विश कहलाता था। ऋग्वैदिक समाज में सर्वप्रथम दो वर्ण थे - आर्य व दास। ऋग्वेद के अनुसार ऋषि अगस्त्य ने दोनों वर्णों का पोषण किया तथा जब उत्पादन अधिशेष की स्थिति उत्पन्न हुई तो विश का विभाजन योद्धा, पुरोहित एवं सामान्य लोगों में हो गया। इस तरह वर्णव्यवस्था का आधार अब कर्म हो गया। ऋग्वेद में एक भाट कहता है - मैं कवि हूँ, मेरे पिता चिकित्सक हैं और मेरी माता आटा पीसती है - - -। शूद्र की चर्चा प्रथम बार ऋग्वेद के 10 वें मंडल के पुरुषसूक्त में हुई है। पुरुष सूक्त में ही पहली बार वैश्य शब्द आया है। ब्राह्मण की तुलना ब्रह्मा के मुख से, क्षत्रिय की भुजा से, वैश्य की जंघा से एवं शूद्र की पैर से की गई है। ब्राह्मण की चर्चा 14 बार क्षत्रिय शब्द का प्रयोग 9 बार

स्त्रियों की स्थिति

सामाजिक व्यवस्था का आधार रक्त संबंध था। समाज पितृसत्तात्मक था, किन्तु स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी। लड़कियों की शादी 16 या 17 वर्ष की आयु में होती थी। विधवा एवं अंतर्जातीय बहुपतित्व विवाह एवं अपने संबंध में विवाह के चिह्न मिलते हैं। स्त्रियों को उपनयन संस्कार का अधिकार था। लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विश्ववारा, सिकता

②

अपि विदुषी महिलाएँ थी। लोपामुद्रा क्षत्रिय वर्ण की थी किन्तु उसकी शादी ऋषि अगस्त्य से हुई। विधवा विवाह एवं नियोग प्रथा का प्रचलन था। विदुषी महिलाओं को ऋषिका या ब्रह्मवादिनी कहा जाता था। जीवन भर अविवाहित रहने वाली महिला को 'अमाजू' कहा जाता था। ऋग्वेद के आठवें मण्डल में अपाला के अपनी पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा प्राप्ति का उल्लेख है। स्त्रियाँ सभा एवं समिति मे भाग लेती थी। साथ ही वे पति के साथ यज्ञ मे भी भाग लेती थी। ऋग्वेद में उत्सवों में कन्याओं द्वारा पति वरण की चर्चा है तथा चर्म रोग के कारण घोषा का विवाह समय पर न होने की चर्चा है।

भोजन

ऋग्वैदिक लोगों का मुख्य भोजन - अन्न, फल, दुग्ध, दही, एवं मांस था। सोम यज्ञ के अवसर पर तथा सुरा साधारण अवसर पर पिये जाने वाला नशीला पदार्थ था। सोम रस की ऋग्वेद के नवें मण्डल में विस्तार से चर्चा की गई है। सोम का पौधा पहाड़ो पर, विशेष रूप से मूजवंत पर्वत पर उत्पन्न होता था। गाय को ऋग्वेद मे 'अघन्या' कहा गया है, इसलिये उसका मांस निषिद्ध था, किन्तु बैल, भेड़, बकरी का मांस खाया जाता था। यज्ञ के अवसर पर इनकी बलि दिये जाने पर पुरोहित भी इसका मांस खाते थे। घोड़े के मांस अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर खाया जाता था। संभवतः नमक और मछली नहीं खाया जाता था।

वस्त्र

सूत, मृगचर्म और ऊन। सबसे अधिक भेड़ की ऊन के बने वस्त्र का प्रयोग करते थे। वस्त्र तीन प्रकार के होते थे -

1. कमर से नीचे पहने जाने वाला - नीवी
2. कमर से ऊपर पहने जाने वाला - वासस
3. चादर या ओढ़नी - अधिवास -

लगाए।

दास व्यवस्था

दास व्यवस्था प्रचलित थी। दान में दास दिये जाते थे। दासों की तुलना दासाओं में दासियों के दान के अधिक उल्लेख मिलते हैं, कृषि दास अभी नहीं थे। केवल दास का प्रचलन था।

वाणिज्य एवं व्यापार – वाणिज्य एवं व्यापार बहुत ही सीमित था। पणि नामक अनार्य जो अपनी कंजूसी के लिए प्रसिद्ध थे वाणिज्य व्यापार से जुड़े थे, पणि नामक ये व्यापारी आर्यों के शत्रु के रूप में भी चित्रित किये गये हैं। इनमें से कुछ पराजित

लोग वस्त्रों को सीलने तथा काटने की कला जानते थे। आभूषणों के साथ पगड़ी भी प्रयोग करते थे।

शिक्षा

इस समय शिक्षा मौखिक रूप से दी जाती थी। शिक्षा की चर्चा सातवें मण्डल में है। विद्यार्थी के अर्थ में ब्रह्मचारिन का उल्लेख ऋग्वेद के दशम् मण्डल के एक सौ नवें सूक्त में मिलता है। अध्ययन का प्रमुख विषय वेद था। इसके अतिरिक्त छन्द, शास्त्र, अनुष्ठान, गणित, ज्यामिति, ज्योतिष - भूगोल आदि अध्ययन के प्रमुख विषय थे।

मनोरंजन

संगीत मनोरंजन का साधन था। सोमरस निकालते समय ब्राह्मणों द्वारा संगीतपूर्ण पाठ होता था। पुरुष नर्तक 'नृत्य' तथा महिला 'नृतु' कहलाते थे।

नृत्य व संगीत के अतिरिक्त रथ दौड़, शिकार, जुआ खेलना आदि मनोरंजन के साधन थे।